



[पूर्वी उत्तर प्रदेश में दलित समाज के परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता का एक भौगोलिक विश्लेषण]

डॉ यशपाल कन्नौजिया
सहायक प्राध्यापक प्रभुनारायण सिंह पी जी कॉलेज
कासिमाबाद, गाजीपुर

सार :

उत्तर प्रदेश-

उत्तर प्रदेश भारत के सीमांत प्रदेशों में से एक है। उत्तर में उत्तरांचल एवं नेपाल (देश), पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़, पश्चिम में राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली स्थित हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह 23° 52' उत्तरी अक्षांश से 30° 25' उत्तरी अक्षांश तथा 77° 3' पूर्वी देशांतर से 84° 39' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 85845 वर्ग किलोमीटर है (जनगणना, 2011)।

राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल सम्पूर्ण देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 8.9 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश, देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है जहाँ देश की कुल जनसंख्या का लगभग 16.49 प्रतिशत भाग निवास करता है। 2011 वर्ष की जनगणना में साक्षरता प्रतिशत 69.72 है, जिसमें पुरुष साक्षरता 79.24 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 59.26 प्रतिशत है। सामाजिक सूचकांक की दृष्टि से उत्तर प्रदेश भारत के सर्वाधिक पिछड़े तीन राज्यों में से एक है। शिशु मृत्यु दर, लिंगभेद तथा महिला साक्षरता के क्षेत्र में भी इस राज्य की हानिकारक है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश को पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग में विभाजित कर पूर्वी भाग को शोध कार्य हेतु अध्ययन के लिये चुना गया है।

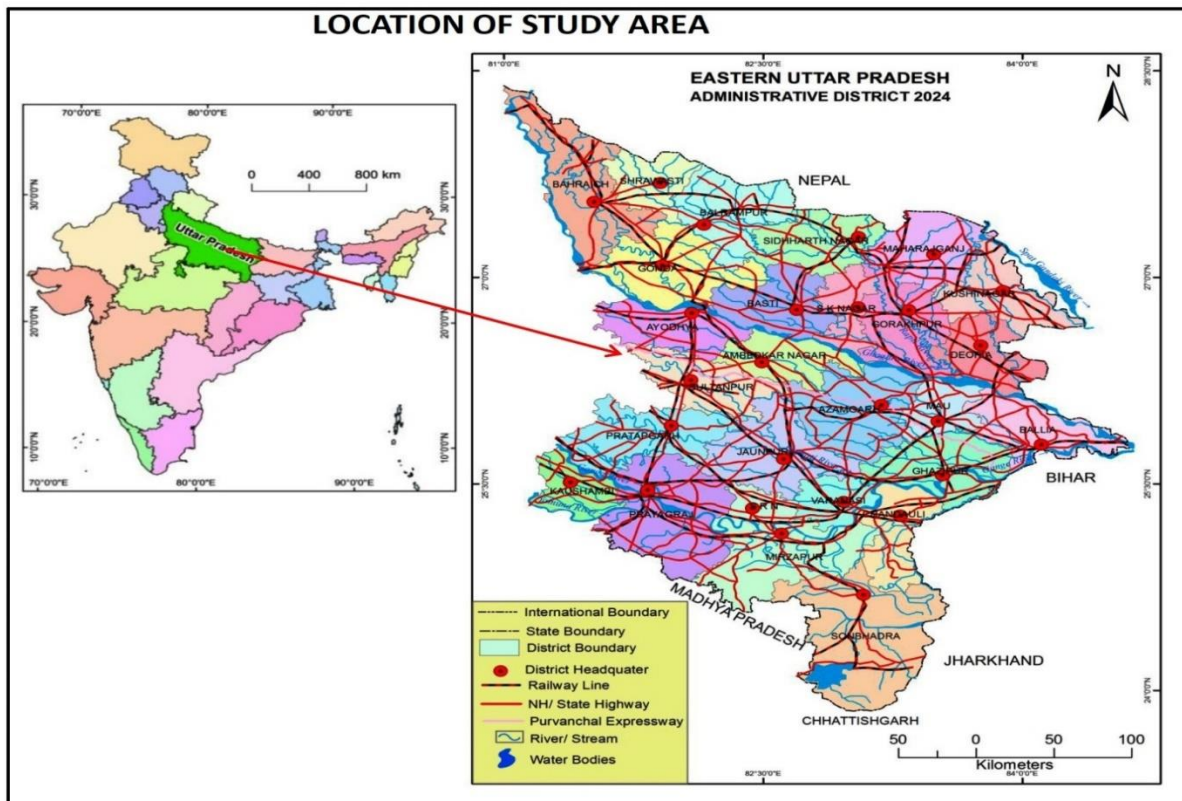
Received	Accepted	Published	Article Type
25/07/2026	30/08/2026	10/09/2026	Research Paper



पूर्वी उत्तर प्रदेश की स्थिति एवं विस्तार-

पूर्वी उत्तर प्रदेश का विस्तार $80^{\circ}45'$ पूर्व से $84^{\circ}46'$ पूर्व और $23^{\circ}45'$ से $28^{\circ}30'$ उत्तर में विस्तृत है व पश्चिमी गंगा के मैदान में एक परिभाषित भौगोलिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कुल 27 जनपद- गाजीपुर, गोंडा, आजमगढ़, बस्ती, देवरिया, श्रावस्ती, बहराइच, अयोध्या (फैजाबाद), कौशाम्बी, प्रतापगढ़, मिर्जापुर, मऊ, जौनपुर, संत कबीर नगर, प्रयागराज (इलाहाबाद), चन्दौली, वाराणसी, बलिया, महाराजगंज, संत रविदास नगर, सुल्तानपुर, गोरखपुर, सोनभद्र, कुशीनगर, अंबेडकर नगर, बलरामपुर एवं सिद्धार्थनगर आते हैं। 1991 की जनगणना के अनुसार जनपदों की संख्या 19 थी। 2002 में इनकी संख्या 27 हो गयी। यह संख्या नये जनपदों के बनाये जाने का परिणाम है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश यह लगभग 8600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल को घेरता है। सन 2001 में इसकी जनसंख्या 4.65 करोड़ तथा घनत्व 485 वर्ग किमी था। भारत के कुछ अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों में से एक है। सन् 2011 में जनसंख्या 6.66 करोड़ तथा घनत्व 775 प्रति वर्ग किमी हो गया।



स्रोत: आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उ0प्र0 (2022) द्वारा प्राप्त मैप पर डिजिटाइजेशन।
अवस्थिति मानचित्र सं0 1.1

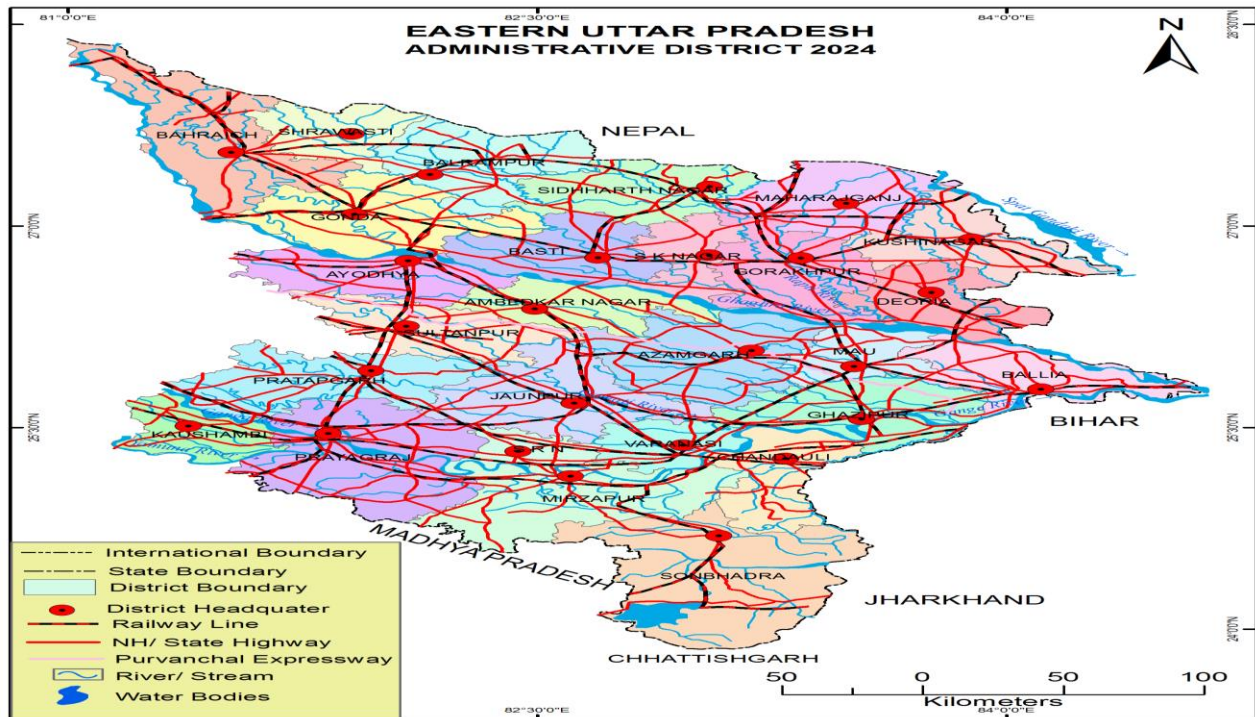


भौगोलिक संरचना-

भौगोलिक संरचना के आधार पर पूर्वी उत्तर प्रदेश को निम्नलिखित तीन प्रमुख जोन में बांटा गया है:

- (1) उत्तरी
- (2) मध्यवर्ती तथा
- (3) दक्षिणी

तीनों जोन की अलग-अलग भौगोलिक संरचना है। उत्तरी क्षेत्र या जोन हिमालय के शिवालिक श्रेणी का हिस्सा है और कुल क्षेत्र का 5 प्रतिशत क्षेत्रफल घेरता है। मध्यवर्ती जोन लगभग पूरे क्षेत्र का 88 प्रतिशत क्षेत्रफल घेरता है। उसका निर्माण गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा छोड़े गये निक्षेपों से हुआ है। यह बालू सिल्ट और क्ले मिट्टी से बना है यहाँ की मिट्टी की ऊपरी सतह 30 मीटर लगभग गहरी है। इसे दो सब-जोन (उप क्षेत्र) में बाँटा गया है- खादर एवं बांगर। बांगर एल्यूवियम से बना है, जो बड़े हिस्से को घेरता है। नदियों, द्वारा लाकर जमा की गयी तलछट को एल्यूवियम अर्थात् काँप मिट्टी कहा जाता है एवं इसमें चिकनी मिट्टी का अंश अधिक होता है, जबकि खादर मिट्टी उपजाऊ एवं मुलायम है। प्लिस्टोसीन युग से लेकर वर्तमान समय तक गंगा प्रवाहान्तर की नदियाँ हजारों मीटर जलोढ़ का जमाव कर चुकी है एवं वर्तमान समय में भी कर रही हैं (कृष्णन, 1960) मध्यवर्ती जोन के उत्तर-दक्षिण में एल्यूवियम की चौड़ाई घटती है और मध्य गहरी होती है। दक्षिणी जोन में विन्ध्यन प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जो काले रंग की होती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश का 7 प्रतिशत इस जोन में आता है। यह इस क्षेत्र की पुरानी संरचना है।



स्रोत: आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उ0प्र0 (2022) द्वारा प्राप्त मैप पर डिजिटाइजेशन।

अवस्थिति मानचित्र सं0 1.2



अध्ययन आधार-

प्रस्तुत अध्याय में सम्बन्धित विषयों पर विश्लेषण हेतु प्रायः द्वितीयक सूचनाओं एवं आँकड़ों का अभाव रहा है। अतः दलित जातियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण इस अध्याय में प्रतिदर्श ग्रामों का प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जो निम्नवत् है:

प्रतिदर्श ग्राम एवं नगर-

प्रतिदर्श ग्राम एवं नगरों के चयन करते समय इन बातों को विशेषतः संज्ञान में लिया गया है कि ये ग्राम एवं नगर अध्ययन क्षेत्र तथा विषय दोनों को समग्र रूप से सन्दर्भित कर सके ग्रामों एवं नगरों के नाम तथा चयन के मुख्य बिन्दु निम्नवत् हैं-

1. सबसे बड़े नगर प्रयागराज (सलौरी), वाराणसी (चाँदमारी) एवं गोरखपुर (मेडिकल कालेज)।
2. सबसे छोटे नगर एवं कस्बा गाजीपुर (गोराबाजार), मऊ (गालीबपुर) आजमगढ़ (सिधारी) एवं सिकन्दरपुर (कस्बा)।
3. अम्बेडकर ग्राम फत्तेपुर एवं राजापुर (गाजीपुर)।
4. सेवा केन्द्र आधारित ग्राम चन्दवक (जौनपुर) एवं दुबारी (मऊ)।
5. जनसंख्या आकार आधारित ग्राम हरिहरपुर, मढ़ी (जौनपुर) रूपौधा, रैपुरिया (मिर्जापुर), धुरकरी (सोनभद्र)।
6. राजमार्ग स्थित ग्राम भुजौटी (मऊ)।
7. विकासखण्ड या जनपद सीमा स्थित ग्राम इन्दरबार (वाराणसी)।
8. अनुसूचित जाति जनसंख्या आधारित ग्राम जमुई (बलिया), पाही (आजमगढ़), भोजापुर (चन्दौली), उमरी मनोहरपुर प्रयागराज (इलाहाबाद)।
9. क्षेत्रफल आधारित गाँव मेहड़ा (देवरिया)।

उत्तरदाताओं की आयु संरचना-

व्यक्तिगत सर्वेक्षण के दौरान आयु संरचना को ध्यान में रख कर सभी आयुवर्ग से उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

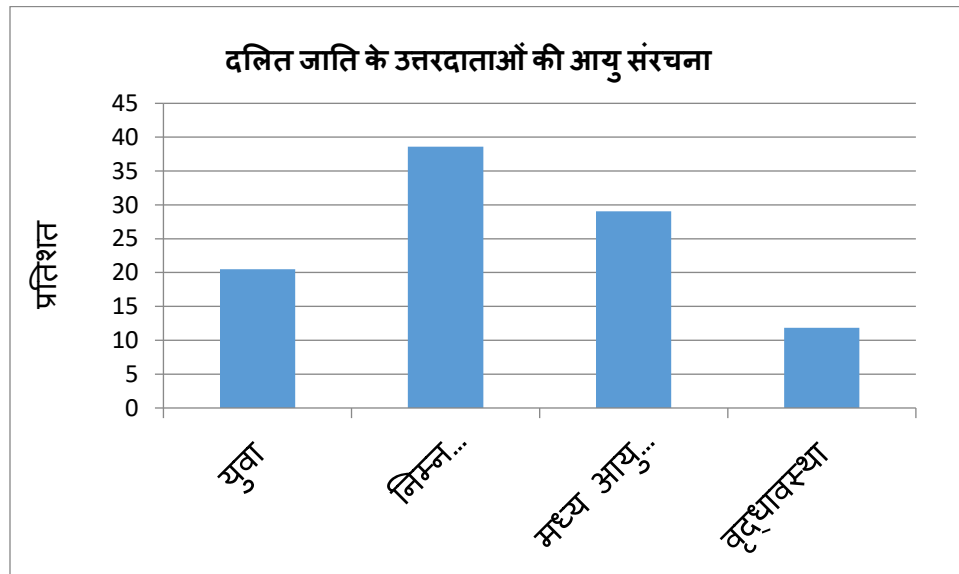
तालिका 4.1 एवं चित्र 4.1 अ से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 30 वर्ष से कम आयुवर्ग के 20.51 प्रतिशत लोगों को सर्वेक्षण हेतु सम्मिलित किया गया है सर्वाधिक संख्या 30 से 45 वर्ष की आयुवर्ग के लोगों की है जो कुल उत्तरदाताओं की संख्या का 38.62 प्रतिशत है। दूसरी वरीयता में 45 से 60 वर्ष की आयुवर्ग के लोगों को रखा गया है जिनकी संख्या 29.03 प्रतिशत है। 60 वर्ष से ऊपर की आयुवर्ग के लोगों की संख्या 11.85 प्रतिशत है।

तालिका 4.1
दलित जाति के उत्तरदाताओं की आयु संरचना, 2022-23

क्र.सं.	श्रेणी	आयुवर्ग	उत्तरदाता	
			संख्या	प्रतिशत
1	युवा	30 से कम	154	20.51
2	निम्न मध्य आयु	30-45	290	38.62
3	मध्य आयु से उपर	45-60	218	29.03
4	वृद्धावस्था	60 से ऊपर	89	11.85
योग			751	100.00



स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित



स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित
चित्र 4.1

परिवार नियोजन कार्यक्रम-

भारत पहला देश था जिसने 1950 के दशक में सरकार द्वारा चलाये जाने वाला परिवार नियोजन कार्यक्रम तैयार किया। केन्द्र सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रम की शुरुआत 1952 से की गयी जिसका प्रमुख उद्देश्य भारत की तीव्र गति से वृद्धि बढ़ती जनसंख्या पर नियन्त्रण करना था। जिसके प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार ने रेडियो एवं टी०वी० पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के साथ कई अन्य तरीकों का इस्तेमाल किया। लेकिन भारत में व्याप्त अशिक्षा के कारण लोग इस कार्यक्रम के प्रति जागरूक नहीं हो पाये और यह कार्यक्रम अधिक रूप से सफल नहीं रहा। तदपि यह कार्यक्रम वर्तमान समय में भी जारी है और वर्तमान समय में भी इस कार्यक्रम का कुछ प्रभाव पड़ा है जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि में कुछ कमी आयी है। दलित जातियों में कार्यक्रम का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

अनुसूचित जातियों से परिवार नियोजन के बारे जानने का प्रयास तालिका 4.18 एवं चित्र 4.14 में किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 52.33 प्रतिशत परिवारों को परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता है, 47.67 प्रतिशत परिवारों को परिवार नियोजन कार्यक्रम की कोई जानकारी नहीं है। इसका प्रमुख कारण इन जातियों में इच्छाशक्ति की कमी, रेडियो, टी०वी०, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं का अभाव आदि है। इसकी अनुपलब्धता ने इन जातियों के विकास के स्तर को कम किया है। जातिगत आधार पर परिवार नियोजन के प्रति सर्वाधिक जागरूकता धोबी (64.36 प्रतिशत) में है, 35.64 प्रतिशत परिवारों में परिवार नियोजन के प्रति कोई जागरूकता नहीं है। सबसे कम जागरूकता मुहसर (21.05 प्रतिशत) उपजाति में है।



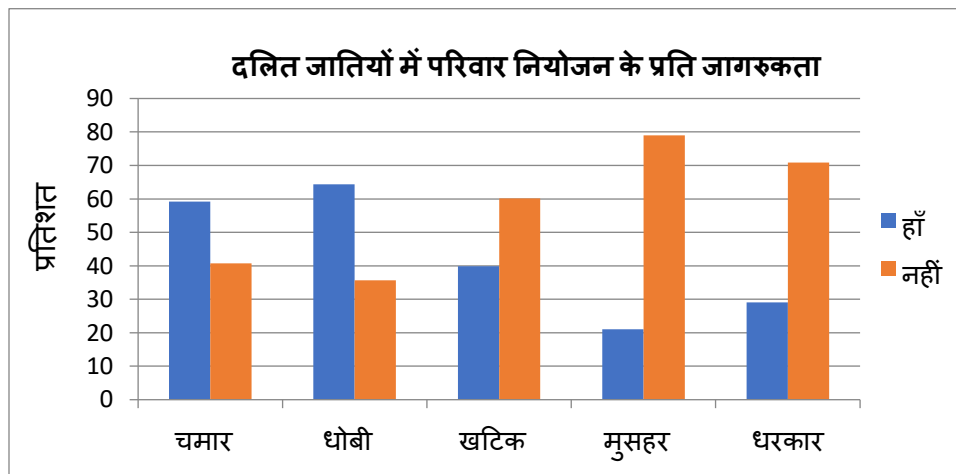
78.95 प्रतिशत परिवारों में परिवार नियोजन के प्रति कोई जागरूकता नहीं है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मुसहर जाति के विकास का स्तर कितना निम्न है।

तालिका 4.18

दलित जातियों में परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग

क्र.सं.	उपजाति	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	चमार	186	59.24	128	40.76	314	41.81
2	धोबी	130	64.36	72	35.64	202	26.90
3	खटिक	49	39.84	74	60.16	123	16.38
4	मुसहर	12	21.05	45	78.95	57	7.59
5	धरकार	16	29.09	39	70.91	55	7.32
योग		393	52.33	358	47.67	751	100.00

स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित
इसका प्रमुख कारण अध्ययन क्षेत्र में ये जातियाँ आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से बहुत पिछड़ी हुई हैं और इनके पास मनोरंजन के साधनों की अनुपलब्धता एक प्रमुख कारण है। क्रमशः चमार (59.24 प्रतिशत) खटिक (39.84 प्रतिशत), धरकार (29.09 प्रतिशत) है। दलित जातियों में इच्छाशक्ति की कमी, अशिक्षा, मनोरंजन के अभाव के कारण पिछड़ी हुई है। केन्द्र एवं राज्य सरकार को इसके प्रति गम्भीरता से विचार करना होगा और परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार हेतु अन्य कार्यक्रम भी चलाने होंगे जिससे अधिक से अधिक लोग इसके बारे में जाने और इसको अपनाएँ।



स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकलित

चित्र 4.14



परिवार के आकार-

भारतीय समाज में परिवार जितना बड़ा होता है वह परिवार ज्यादा विकसित एवं सुरक्षित होता है और बच्चों का जन्म होना यहाँ के समाज में ईश्वर की देन समझा जाता है और परिवार में जिस दम्पति के पास लड़का नहीं होता है उसे समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है, इसलिए लड़का होने की प्रतीक्षा में कई लड़कियों का जन्म हो जाना स्वाभाविक है। जिससे परिवार का आकार बहुत बढ़ा हो जाता है। परिवार में जितने अधिक लड़के होते हैं, वह परिवार उतना ही मजबूत एवं विकसित समझा जाता है। लड़कियों को समाज में उतनी वरीयता नहीं दी जाती है, और कई लड़कियों का जन्म होने से पहले गर्भपात करके हत्या कर दी जाती है। जिससे भारत में लिंगानुपात में कमी आ रही है। लेकिन वर्तमान समय में भारतीय समाज में लोगों का इस दृष्टिकोण के प्रति परिवर्तन आ रहा है बड़े परिवार को आर्थिक विकास में बाधा माना जाता है और छोटे परिवार को सुखी परिवार माना जाता है।

दलित जातियों के दृष्टिकोण में 67.91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बड़े परिवार को आर्थिक विकास में बाधक है। इसके पीछे उनका यह तर्क था कि बड़े परिवार में अधिकतर काम करने वालों की संख्या कम होती है और कार्य न करने वालों की संख्या अधिक होती है जिससे परिवार में सन्तुलन बैठाना मुश्किल होता है और इस कारण बड़े परिवार को आर्थिक विकास में बाधा मानते हैं। 32.09 प्रतिशत लोग बड़े परिवार को आर्थिक विकास में बाधा के बजाय आर्थिक विकास में सहायक मानते हैं इसके पीछे उनका यह तर्क था कि परिवार जितना बड़ा होगा कमाने वाले उतने अधिक होंगे और परिवार का उतना आर्थिक विकास होगा। अध्ययन क्षेत्र में 68.44 प्रतिशत लोगों ने छोटे परिवार को सुखी परिवार माना। इसके पीछे उनका यह तर्क था कि परिवार में जितने कम लोग होते हैं उससे काम करने वाले के ऊपर दबाव कम होता है और परिवार का विकास तीव्र गति से होता है। 31.56 प्रतिशत लोगों ने इसे अस्वीकार किया और उसके पीछे यह तर्क दिया कि छोटे परिवार में आय कम होती है, जिससे इन लोगों का विकास धीमी गति से होता है (तालिका 4.19)।

तालिका 4.19

दलित जातियों में परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण

क्र.सं.	उपजाति	बड़ा परिवार आर्थिक विकास में बाधक				छोटा परिवार सुखी परिवार			
		हाँ		नहीं		हाँ		नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	चमार	227	71.84	89	28.16	224	70.89	92	29.11
2	धोबी	147	73.50	53	26.50	136	68.00	64	32.00
3	खटिक	72	58.54	51	41.46	92	74.80	31	25.20
4	मुसहर	32	56.14	25	43.86	33	57.89	24	42.11
5	धरकार	32	58.18	23	41.82	29	52.73	26	47.27
योग		510	67.91	241	32.09	514	68.44	237	31.56

स्रोत: प्रतिदर्श ग्राम में व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2022-23 के आधार पर परिकल्पित



संदर्भ सूची-

1. आहूजा, राम (2002), सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ 243, 101.
2. खान, एम०ए० (1980), शेड्यूल्ड कास्ट एण्ड देयर स्टेट्स इन इण्डिया, जयपुर।
3. घूरिये, जी०एस० (1961) कास्ट, क्लास एण्ड आकूपेशन, पापुलर बुक डिपॉ, बाम्बे, 1961, पृष्ठ 14.
4. चन्द्र, सोती शिवेन्द्र (2002), भारत में सामाजिक समस्याएं, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 313-314.
5. जान्सन, एल्मर एच० (1973), सोशल प्राबल्म आफ अर्बन मैन, द डार्सी प्रेस, होमवुड, इलिनायस्, पृष्ठ 684.
6. प्रसाद, माता (2007), दलित जातियों का दस्तावेज, सम्यक प्रकाशन, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली, पृष्ठ 22.
7. भारद्वाज, ए०एन० (1979), प्राबल्म्स आफ शेड्यूल्ड कास्ट एण्ड शेड्यूल्ड ट्राइब्स इन इण्डिया, लाइट एण्ड लाइफ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 38.
8. राम, महेन्द्र (2009), दलित उत्थान में शिक्षा की भूमिका, रिसर्च जर्नल आफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज, अंक 6, पृष्ठ 691.
9. सिन्हा, आर० के० (1986), एलिनेशन एमन्ग शेड्यूल्ड कास्ट, मानस पब्लिकेशन, दिल्ली।